कविग्राम

वर्ष 1, अंक 3, दिसम्बर 2020

राजनीति में काव्य नीति

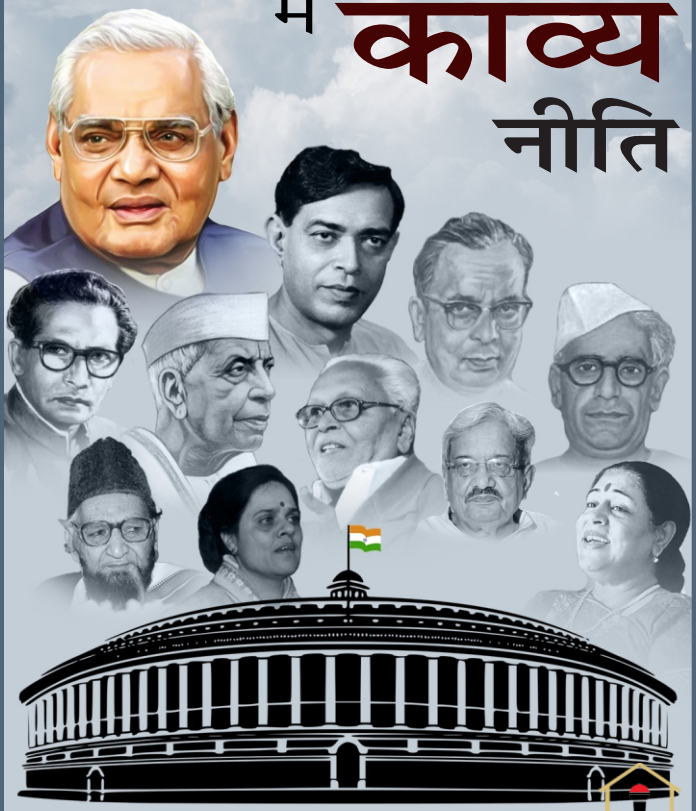

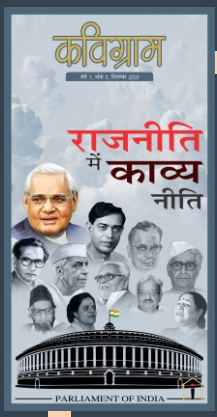

कविग्राम

वर्ष 1, अंक 3, दिसम्बर 2020

परामर्श मण्डल
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

सम्पादक
चिराग़ जैन

सह सम्पादक
प्रवीण अग्रहरि

शोध तथा संग्रहण
मनीषा शुक्ला
शनि अवस्थी

प्रकाशन स्थल
नई दिल्ली

सर्वाधिकार
कविग्राम

सम्पर्क

8090904560

TheKavigram@gmail.com

kavigram.com

facebook.com/kavigram

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

यह पत्रिका नियमित रूप से अपने व्हाट्सएप पर निःशुल्क प्राप्त करने के लिये कृपया साथ में दिये गये हरे निशान पर स्पर्श करें। स्पर्श करने पर जो व्हाट्सएप खुलेगा, उसमें अपना नाम तथा अपने शहर का नाम लिखकर भेज दें।

सम्पादकीय

एक समय था, जब सिंहासन के निर्णयों पर असहमति प्रकट करने का साहस या तो संन्यासियों के पास होता था अथवा कवियों के पास। भारतीय इतिहास में कवियों ने राजनैतिक कामकाज में महती भूमिका निभाई है। चन्दरवरदाई से लेकर अमीर ख़ुसरो तक और अब्दुर्रहीम ख़ानखाना तक कवियों की राज-दरबारों में न केवल नियुक्ति रही है वरन् राजकाज में उनका परामर्श भी महत्त्वपूर्ण रहा है। मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र स्वयं एक मक़बूल शायर थे।

वर्तमान राजनीति में भी अनेक कविगण सक्रिय रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद से ही राज्यसभा, लोकसभा, विधानसभाएँ तथा अन्य राजनैतिक गलियारे कवियों की उपस्थिति के हामी रहे हैं।

कविग्राम मासिक का यह अंक इसी विषय को आवरण कथा के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। छोटे-बड़े राजनैतिक जीवन के साथ-साथ मंच पर भी सक्रिय रहने वाले काव्य-नक्षत्र अपने सहज मंचीय अस्तित्व के साथ कितने महत्त्वपूर्ण पदों का भार संभाले रहे, इस बात का ज्ञान कवि-कुनबे के लिये इसलिये आवश्यक है ताकि मंचीय सफलताओं की क्षणिक उपलब्धियों से उत्पन्न होने वाले अहम् से काव्य-प्रतिभाएँ अछूती रह सकें।

कविग्राम मासिक के पिछले दो अंकों पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ उत्साहवर्द्धक हैं किन्तु हम यह भी अपेक्षा करते हैं कि कविग्राम की इस मासिक पत्रिका को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में आप हमारा सहयोग करें। डिजिटल प्रचार के आभासी जगत् में जहाँ-तहाँ से कॉन्टेक्ट डाटा ख़रीदकर बलात् अपनी पत्रिका लोगों तक भेज देना बेहद आसान तो है किन्तु नैतिक नहीं है। अतएव, आपसे अनुरोध है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो कवि-सम्मेलनों अथवा कविताओं में रुचि रखता हो, उसको कविग्राम का विधिवत् सदस्य बनवाएँ ताकि प्रचार हेतु निरंतर अनैतिक होते जा रहे समाज में हम एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर सकें जिसका अवलम्बन थामकर नैतिकता की वल्लरी भी कंगूरे छू सके।

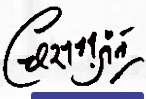

facebook

राजनीति में काव्यनीति

डॉ. उदयप्रताप सिंह जी ने हाल ही में एक ऑनलाइन कार्यक्रम में कहा कि 'कविता और राजनीति एक-दूसरे के पूरक हैं।' कवि जिस जनमत का निर्माण करता है, राजनेता उसी जनमत को शिरोधार्य कर राष्ट्र को संचालित करता है। यही कारण है कि कवि-सम्मेलन के मंच पर राजनैतिक विषय और राजनैतिक पंचायतों में कविता का ज़िक्र चल ही निकलता है। कवियों की कविताएँ उद्धरित किये बिना राजनेताओं के भाषण पूरे नहीं होते और राजनेताओं की समालोचना के बिना कवियों का काव्यपाठ अधूरा रहता है।

भारतीय लोकतन्त्र को पुष्ट करने में कवियों का महती योगदान रहा है। राजनीति ने भी कवियों का समुचित सम्मान किया है। हमारे यहाँ ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जब कवियों को राजनीति के गलियारों में सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठा देने में राजनैतिक दलों ने भूमिका अदा की है। अनेक कवि सक्रिय राजनीति में उतरे और सफल रहे।

भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस क्रम में वह पहला नाम है जो भारतीय राजनीति के चरम तक पहुँचकर भी अपने भीतर के कवि को जीवित रख पाये। श्री वाजपेयी स्वाधीनता संग्राम से ही सक्रिय राजनेता रहे। तीन बार भारत के प्रधानमन्त्री रहे अटल जी बलरामपुर, ग्वालियर, नई दिल्ली तथा लखनऊ लोकसभा सीट से लोकसभा सदस्य रहे। उत्तर प्रदेश तथा मध्यप्रदेश से राज्यसभा सांसद के रूप में भी आपने काम किया। मोरारजी सरकार में आप विदेशमन्त्री रहे तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता का दायित्व भी बख़ूबी निभाया। प्रधानमन्त्री रहते हुए आपकी कविताओं का एक वीडियो एल्बम भी प्रसारित हुआ जिसको श्री जगजीत सिंह ने स्वर दिया तथा श्री शाहरुख़ ख़ान ने उसमें अभिनय किया। आपने देश के प्रतिष्ठित लालक़िला कवि सम्मेलन से काव्यपाठ भी किया।

वीर रस के प्रख्यात कवि श्री बालकवि बैरागी ने भी अपने कवित्व को जीवित रखते हुए भारतीय राजनीति में सक्रिय रहे। श्री बैरागी मन्दसौर लोकसभा सीट से दो बार लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए। मध्यप्रदेश से आप राज्यसभा सांसद भी रहे। मानसा विधानसभा सीट से विधायक रहते हुए आप मध्यप्रदेश सरकार में मन्त्री रहे। बालकवि बैरागी जीवन के अन्तिम क्षण तक कवि-सम्मेलन के मंच पर सक्रिय रहे। मन्त्रालय का कार्यभार संभालते हुए भी बैरागी जी ने कवि-सम्मेलनों से दूरी नहीं बनाई।

राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी की शौर्यपताका का पर्याय हैं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से तीन बार राज्यसभा सांसद रहे दिनकर जी के भीतर का कवि हमेशा उनके राजनेता पर हावी रहा। राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं के अन्धकूप को भी अपनी कविता की ज्योति से सदैव आलोकित करने वाले दिनकर जी ने जयप्रकाश आन्दोलन के समय दिल्ली के रामलीला मैदान में तत्कालीन कांग्रेस सरकार की नीतियों के विरुद्ध कविता पढ़ी कि 'सिंहासन ख़ाली करो, कि जनता आती है।' सैद्धान्तिक आदर्श के ऐसे उदाहरण राजनीति में कम ही देखने को मिलते हैं।

डॉ. हरिवंशराय बच्चन विदेश मन्त्रालय में हिन्दी विशेषज्ञ रहे तथा बाद में राज्यसभा सदस्य मनोनीत किये गये। श्री मैथिलीशरण गुप्त भी राज्यसभा के मनोनीत सदस्य रहे तथा जीवन के अन्तिम क्षण तक इस पद पर बने रहे। श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रहे तथा स्वतन्त्रता के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे। उन्होंने पहले आम चुनाव में कानपुर दक्षिण व इटावा ज़िला की सीट से लोकसभा चुनाव लड़ा और भारी मतों से विजयी हुए, बाद में वे राज्यसभा सांसद बने तथा जीवन पर्यन्त इस पद को सुशोभित करते रहे। श्री भगवती चरण वर्मा भी राज्यसभा से सांसद रहे। श्री बेकल उत्साही को भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने राज्यसभा सदस्य बनाया तथा वे लम्बे समय तक इस पद पर सुशोभित रहे।

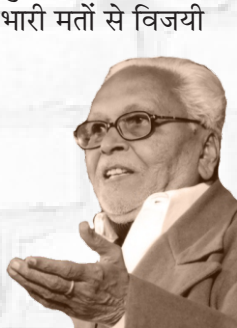

वीर रस के कवि श्री ओमपाल सिंह निडर जलेसर लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर चुनाव लड़े और लोकसभा सदस्य बने। मध्यप्रदेश के प्रतिष्ठित कवि श्री सत्यनारायण सत्तन भी विधानसभा सदस्य रहे तथा राज्यमन्त्री दर्जा प्राप्त नेता के रूप में राजनीति में सक्रिय रहते हुए अनेक पदों को सुशोभित किया।

कवि-सम्मेलनों में गीतऋषि के रूप में ख्यातिप्राप्त डॉ. उदयप्रताप सिंह समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं। वे मैनपुरी लोकसभा सीट से लोकसभा सांसद निर्वाचित होने के अतिरिक्त राज्यसभा के भी सदस्य रहे। समाजवादी पार्टी का कवियों और शायरों के साथ गहरा रिश्ता रहा है। यही कारण है कि समाजवादी पार्टी की सरकार में अनेक कवियों को राज्यमन्त्री का दर्जा दिया गया। श्री गोपालदास नीरज, श्री सोम ठाकुर, श्री आत्मप्रकाश शुक्ल, डॉ. सुनील जोगी और डॉ. सरिता शर्मा सरीखे अनेक कवियों के पास उत्तर प्रदेश में राज्यमन्त्री दर्जा रहा। उर्दू के मशहूर शायर डॉ. वसीम बरेलवी को भी समाजवादी पार्टी ने एमएलसी के पद पर सुशोभित किया।

डॉ. प्रभा ठाकुर हिन्दी कवि-सम्मेलनों की सर्वाधिक सफल कवयित्रियों में से एक हैं। वे जब सक्रिय राजनीति में उतरीं तो अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष रहीं। अजमेर लोकसभा सीट का लोकसभा में भी आपने प्रतिनिधित्व किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से राजस्थान से आप राज्यसभा सांसद भी रहीं।

डॉ. गिरिजा व्यास एक प्रतिष्ठित कवयित्री होने के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वरिष्ठ सदस्या भी हैं। सन् 1985 में उदयपुर विधानसभा क्षेत्र से विधानसभा सदस्या के रूप में प्रारम्भ हुआ उनका राजनैतिक जीवन उदयपुर से लोकसभा सांसद बनकर मन्त्रीपद तक पहुँचा। वे अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष भी रहीं।

श्रीमती बरखा शुक्ला सिंह ने हिन्दी कवि-सम्मेलन मंचों पर ख्याति प्राप्त करने के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय योगदान दिया। वे दो बार विधानसभा सदस्या रहने के साथ-साथ दिल्ली महिला कांग्रेस की अध्यक्ष भी रहीं। वर्तमान में वे भारतीय जनता पार्टी की सदस्या हैं।

मध्यप्रदेश के लोककवि श्री सुल्तान मामा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में सक्रिय रहे तथा तराना नगर परिषद् के अध्यक्ष रहे। श्रीमती ऋतु गोयल दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर निगम पार्षद बनीं तथा वर्तमान में उप-महापौर हैं। श्री शशिकान्त यादव भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर मनोनीत पार्षद रहे।

अन्ना हजारे ने जब दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर जनलोकपाल बिल के लिए आन्दोलन किया तो उस आन्दोलन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चेहरों में डॉ. कुमार विश्वास भी एक थे। आन्दोलन समाप्ति के बाद जब आम आदमी पार्टी की आधारशिला रखी गई तो भी डॉ. कुमार विश्वास पार्टी के साथ सक्रिय रूप से जुड़े थे। उन्होंने वर्ष 2014 में अमेठी लोकसभा सीट से आम आदमी पार्टी की टिकट पर राहुल गांधी के विरुद्ध चुनाव लड़ा। यद्यपि चुनाव का परिणाम उनके पक्ष में नहीं रहा लेकिन आम आदमी पार्टी के दिल्ली में सरकार बनाने के कारनामे में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नेताओं में डॉ. कुमार विश्वास का नाम नहीं भूला जा सकता।

इन सबके अतिरिक्त भी देश में तमाम कवियों ने राजनीति में प्रत्यक्ष-परोक्ष भूमिका निभाई है। श्री वेदव्रत वाजपेयी और डॉ. कविता किरण सरीखे अनेक कवियों ने सक्रिय राजनीति में हाथ आज़माये हैं। श्री गजेन्द्र सोलंकी भी भारतीय जनता पार्टी में महत्त्वपूर्ण पद पर रहे।

कविता और राजनीति का यह सम्बन्ध कवियों की ओर से ही नहीं बल्कि राजनेताओं की ओर से भी निभता रहा है। भारत सरकार में मानव संसाधन मन्त्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद को सुशोभित करने वाले श्री रमेश पोखरियाल निशंक एक बेहतरीन कवि हैं। उनके अनेक

काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं तथा कवियों के बीच बैठे हुए उन्हें अनेक अवसरों पर काव्यपाठ करते देखा जा सकता है। इसी प्रकार कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री कपिल सिब्बल को मैंने कई बार सभाओं में कविता सुनाते देखा है। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री सत्यनारायण जटिया को भी काव्यपाठ करते बहुधा देखा जा सकता है। डॉ. मृदुला सिन्हा भी साहित्य जगत् से ही राजनीति में गईं और राज्यपाल जैसे प्रतिष्ठित पद पर सुशोभित हुईं।

लपेटे में नेताजी कार्यक्रम की शूटिंग के दौरान भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री सुधांशु त्रिवेदी भी कई बार तुकबन्दी करते दिखाई दिये हैं। अन्य भी तमाम राजनेता गाहे-बगाहे कविता लिख लेते हैं। राजनीति और कविता के सम्बन्धों को क़रीब से देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि कविता को जब पैरों की ज़रूरत पड़ती है तो उसे राजनीति के दरवाज़े पर जाना पड़ता है और राजनीति को जब संवेदना की ज़रूरत पड़ती है तो उसे कविता का द्वार खटखटाना पड़ता है।

■ चिराग़ जैन

अजब-ग़ज़ब

बात किसी की, नाम किसी का

लालक़िले पर गणतन्त्र दिवस कवि-सम्मेलन का आयोजन था। उसका उद्घाटन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने करना था। नेहरू जी जब मंच पर चढ़ने लगे तो उनका पैर लड़खड़ाया और वे गिरने को हुए लेकिन उनके ठीक पीछे चल रहे श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने उन्हें संभाल लिया।

इस घटना को श्री सोम ठाकुर देख रहे थे। अनेक वर्ष बाद जब सोम ठाकुर जी लालक़िले के कवि सम्मेलन का मंच-संचालन कर रहे थे तब उन्होंने इस घटना का ज़िक्र किया और कहा कि उस दिन मुझे लगा कि **राजनीति जब-जब लड़खड़ाती है तो साहित्य उसे संभाल लेता है।**

यह वाक्य इतना प्रसिद्ध हुआ कि अब कोई इसे दिनकर जी केनाम से तो कोई बच्चन जी के नाम से सुनाता फिरता है। जबकि इस वाक्य की सर्जना श्री सोम ठाकुर ने की और जिस घटना से इस वाक्य की प्रेरणा मिली, उसमें पण्डित नेहरू के साथ मैथिली बाबू थे।■

भूल नहीं जाना

दिसम्बर

1 दिसम्बर	जन्मदिन	अंकित तोमर	facebook
3 दिसम्बर	पुण्यतिथि	बेक़ल उत्साही	
	जयन्ती	चन्द्रसेन विराट	
6 दिसम्बर	जन्मदिन	मनवीर मधुर	facebook
8 दिसम्बर	जयन्ती	बालकृष्ण शर्मा नवीन	
	जन्मदिन	राजीव राज	facebook
9 दिसम्बर	पुण्यतिथि	कैलाश गौतम	
11 दिसम्बर	पुण्यतिथि	कवि प्रदीप	
12 दिसम्बर	पुण्यतिथि	मैथिलीशरण गुप्त	
	जन्मदिन	पवन दीक्षित	
15 दिसम्बर	जन्मदिन	वाहिद अली वाहिद	facebook
	जन्मदिन	मनुव्रत वाजपेयी	facebook
16 दिसम्बर	जन्मदिन	सौम्या श्रीवास्तव	facebook
17 दिसम्बर	पुण्यतिथि	भारत भूषण	
	जन्मदिन	पंकज पलाश	facebook
18 दिसम्बर	पुण्यतिथि	अदम गोण्डवी	
19 दिसम्बर	जन्मदिन	इन्दिरा गौड़	
	जन्मदिन	गोविन्द व्यास	facebook
21 दिसम्बर	पुण्यतिथि	पुरुषोत्तम वज्र	
	जन्मदिन	श्लेष गौतम	facebook
25 दिसम्बर	जयन्ती	अटल बिहारी वाजपेयी	
	जयन्ती	पुरुषोत्तम प्रतीक	
	जयन्ती	माणिक वर्मा	
	जन्मदिन	यशपाल यश	facebook
26 दिसम्बर	जन्मदिन	सत्यप्रकाश सत्य	facebook
28 दिसम्बर	पुण्यतिथि	सुमित्रानन्दन पन्त	
29 दिसम्बर	पुण्यतिथि	विश्वेश्वर शर्मा	
	जन्मदिन	मंज़र भोपाली	facebook
30 दिसम्बर	पुण्यतिथि	दुष्यन्त कुमार	
	जन्मदिन	आलोक श्रीवास्तव	facebook
31 दिसम्बर	पुण्यतिथि	बुद्धिप्रकाश पारीक	
	जयन्ती	रतन सिंह रतन	
	जन्मदिन	गजेन्द्र सोलंकी	facebook

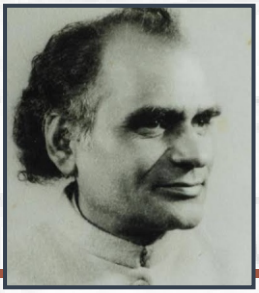

मुझमें क्या आकर्षण

मुझमें क्या आकर्षण
जो तुम अपनी गली छोड़कर आओ

मेरे पास नहीं अपना घर, फिरता रहता हूँ आवारा
और एक तुम हो कि गाँव में, सबसे ऊँचा महल तुम्हारा
कैसे दूँ आदेश उमर को, उनसे ज़रा होड़ कर आओ

मुझमें क्या आकर्षण
जो तुम अपनी गली छोड़कर आओ

लिखा नहीं पाया क़िस्मत में, तुम जैसी सम्पन्न जवानी
तुमने तृप्ति ग़ुलाम बना ली, मेरी प्यास मांगती पानी
तुम्हें ज़रूरत नहीं कि जो तुम अपने नियम तोड़कर आओ

मुझमें क्या आकर्षण
जो तुम अपनी गली छोड़कर आओ

भार मुझे ही अपना जीवन, तुम हो ठेकेदार चमन के
तुमने साख भुना ली अपनी, जुड़े न मुझसे दाम क़फ़न के
मन्दिर में अब ऐसा क्या है, जो तुम हाथ जोड़कर आओ

मुझमें क्या आकर्षण
जो तुम अपनी गली छोड़कर आओ

■ मुकुट बिहारी सरोज

वीपी सिंह का भाषण

लालक़िले से सुनकर भाषण एक चीज़ स्पष्ट हो गई
अपनी बुद्धि ठीक-ठाक थी भाषण सुनकर भ्रष्ट हो गई
सत्तर गज लम्बे भाषण में मीलों लम्बे आश्वासन थे
बीस मिनिट का चित्रहार था, तीस मिनिट के विज्ञापन थे
सब कुछ घिसा-पिटा था राजा, कोई नया विचार नहीं था
प्रतिभा और योग्यता के प्रति, तेरे मन में प्यार नहीं था
तेरा भाषण सचमुच राजा शब्दों की सुन्दर दुकान है
शब्द बेचकर, वोट ख़रीदो ये कुर्सी का संविधान है
इस पर भी तुम ये कहते हो मेरा भारत भी महान है
लेकिन इधर झाँक कर देखो, चोटों के कितने निशान हैं
वोटों की ख़ातिर छुट्टी की करी घोषणा तुम्हें बधाई
लालकिला रो-रोकर कहता, चोर-चोर मौसेरे भाई
राजा तुम रणछोड़दास थे, इसीलिए रण छोड़ दिया है
बात एकता की करते थे, किन्तु देश को तोड़ दिया है
मुद्दे पर मतभेद सही है, पर तुमने तो भेद कर दिया
जिस थाली में तुम्हें खिलाया, उसमें तुमने छेद कर दिया
राजा मुझसे बात करो तुम, खुलकर दो-दो हाथ करो तुम
मंडल का बंडल जलवा दो, या मुझको इतना समझा दो
क्या केवल पिछड़े लोगों के बच्चे ही ग़रीब होते हैं
क्या मध्यमवर्गीय लोगों के फूटे नहीं नसीब होते हैं
हरिजन की चिन्ता जायज़ है, पर इनका भी ज़िक्र करो तुम
रोज़ कर रहे आत्मदाह जो, उनकी भी कुछ फ़िक्र करो तुम
बहुत किया तुमने आवाह्न अब हम तनकर खड़े हो गए
कह दो बाबर के बेटों से, अब लव-कुश भी बड़े हो गए

■ गोविन्द व्यास

बात अच्छी है मग़र...

तुम हमारे द्वार पर दीवा जलाना चाहते हो
बात अच्छी है मग़र
उस दीप की बाती हमारे रक्त से ही क्यों सनी है

कहीं ऐसा तो नहीं, पहले अन्धेरा भेजते हो
फिर सितारों की दलाली कर उजाला बेचते हो
क़ैदख़ाने में पड़ा सूरज रिहाई मांगता हो
या सकल आकाश आंगन में तुम्हारे नाचता हो
कहीं ऐसा तो नहीं, तुम स्वर्ग पाना चाहते हो
बात अच्छी है मग़र
उस स्वर्ग की सीढ़ी हमारी अस्थियों से क्यों बनी है

क्या पता हम रात भर उत्सव मनाने में जगें फिर
ठीक अगली भोर अपनी नीन्द पाने में जगें फिर
छाँव का व्यापार होने लग गया तो क्या करेंगे
और कब तक हम उनींदे नयन में आँसू भरेंगे
तुम मुनादी पीटकर हमको जगाना चाहते हो
बात अच्छी है मग़र
उस नगाड़े पर हमारी खाल मढ़कर क्यों तनी है

तुम हमारे द्वार पर दीवा जलाना चाहते हो
बात अच्छी है मग़र
उस दीप की बाती हमारे रक्त से ही क्यों सनी है

facebook अंकित काव्यांश

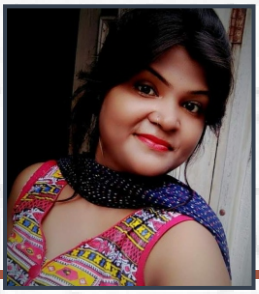

उदास हैं हम

सदाएँ सुन लो हमारे प्यारो! ऐ दोस्त यारो! उदास हैं हम
हँसी का गजरा हमारी ज़ुल्फ़ों में आओ बान्धो, उदास हैं हम

ये चान्द-तारों की लालटेनें, जो अलगनी से टंगी हुई हैं
सिरा गयी हैं, कोई तो जाओ, ये लौ जलाओ, उदास हैं हम

हँसी हमारी क्या तितली, जुगनू, क्या रातरानी चहेती सबकी
हँसी हमारी ग़ुलाबतारी, नज़र उतारो, उदास हैं हम

हसीन चम्पा को क़त्ल कर रंग बनानेवालो, तुम्हें ख़बर है
कनेर कितना उदास बैठा, उसे बताओ, उदास हैं हम

शरद महीने में जन्मदिन है औ शाहज़ादी का हाल देखो
ज़बीं को चूमो, पियो हरारत, गले लगाओ, उदास हैं हम

चनाब! तुम भी तो रोई होगी, उदास सोहनी के दु:ख को छूकर
तो हम भी ख़ानाख़राब ही हैं, हमें संभालो, उदास हैं हम

चलन में थी, सो हँसी पहन ली, मग़र ग़मों से मिलीभगत है
दु:खों ने हमको हसीन रक्खा, सो दु:ख ही लाओ, उदास हैं हम

सरगम अग्रवाल
facebook

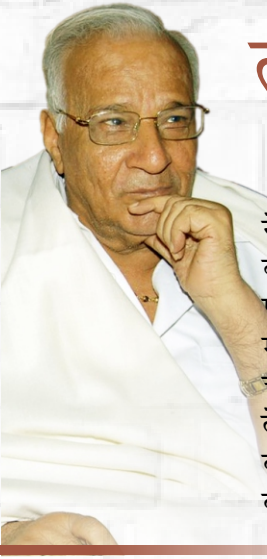

तीन कवित्त राजनीति के

नेता के चरित्र में विचित्रता कमल की है
कीचड़ में रहके भी न कीचड़ में सनता।
पानी-सा जो तरल-सा सरल-सा दिखता था
मन्त्री बनते ही वही दूध-सा उफनता।
चुनावों में लाखों फूँक के करोड़ों जोड़ता है
देश को निचोड़ता है जो भी मन्त्री बनता।
वरती है फिर आहें भरती है, मरती है
वोट डालने के सिवा करती क्या जनता!

लड़का आवारा हो गया है, इसका क्या करूँ,
डाल दीजियेगा राजनीति के व्यापार में।
काम करता है कम, बोलता है ज़्यादा; दादा
तत्काल भेज दो चुनावों के प्रचार में।
देखने में शिष्ट पर आचरणनिष्ठ नहीं
इसके तो चरण पुजेंगे भ्रष्टाचार में।
देश या समाज से न इसे सरोकार कोई
ऐसे ही लोगों की है डिमांड सरकार में।

बापू तेरा नाम लेके वोट मांगते रहे जो
उन भिखमंगों के करम देख लीजिये।
सागर नाली में मिलने के लिये आतुर है
इनके पतन का चरम देख लीजिये।
जिनने दी गाली उनसे ही दोस्ती है पाली
आती नहीं इनको शरम देख लीजिये।
कोई सत्य नहीं, कोई नीति नहीं, देश नहीं,
कुर्सी है इनका धरम देख लीजिये।

■ ओमप्रकाश आदित्य

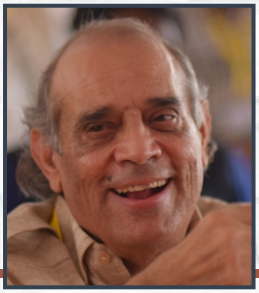

इतिहासों के शिलालेख

कल तुम मेरा नाम पढ़ोगे, इतिहासों के शिलालेख पर
जिनके पैरों में छाले हैं, मैं उनकी आँखों का जल हूँ

मैं पीड़ाओं का गायक हूँ, शब्दों का व्यापार नहीं हूँ
जहाँ सभी चीज़ें बिकती हों, मैं ऐसा बाज़ार नहीं हूँ
मुझ पर प्रश्नचिह्न मत थोपो, कुण्ठित व्याकरणीय पैमानों
मुझको रामकथा-सा पढ़िये, बहुत सहज हूँ, बहुत सरल हूँ

कैसी-कैसी मेहरबानियाँ, जड़ भी चतुर सुजान हुए हैं
जुगनू विरुदावलियाँ गाकर, साहित्यिक दिनमान हुए हैं
मैं डरकर अभिनन्दन गाऊँ, इससे अच्छा है मर जाऊँ
मैं सागर का कर्ज़ चुकानेवाला आवारा बादल हूँ

मैंने पगडण्डी नापी है, अपने पैरों हौले-हौले
मेरे दर से ख़ाली लौटे, राजनीति के उड़न-खटोले
सुविधाओं की हर देहरी पर, मेरे ठोकर-चिह्न मिलेंगे
मैं आँसू का ताजमहल हूँ, झोंपड़ियों का राजमहल हूँ

मेरा मोल लगाने बैठे हैं, कुछ लोग तिजोरी खोले
धरती पर इतना धन कब है, जो मेरी ख़ुद्दारी तोले
जब से मुझको नीलकण्ठिनी क़लम विधाता ने सौंपी है
तन में चित्रकूट-वृन्दावन, मन में गंगा की कलकल हूँ

■ हरिओम पँवार

बलम म्हारो खाबा को शौकीन

बलम म्हारो खाबा को शौकीन
मिनक लुगाया सु मतलब नाही, जीमण में तल्लीन

गरम पराठा माखण वाला, सुबह-सुबह ही भावे
और लंच में राब सोगरो, घी रो भोग लगावे
दाल रो तीखो तड़को चावे, और साथे नमकीन

भीड़-भाड़ में घुस जा बालम, फाड़ धोतियो आवे
भर-भर प्लेटां जीम-जाम ने, जेबां में भर लावे
जीमण बिन तड़पे यूँ साजन, ज्यूँ जल रे बिन मीन!

पेट भटूरो, नाक पकोड़ो, गालड़ा दही-बड़ा है
हाथ चीलड़ा, टांग फाफड़ा, खावे पड़ा-पड़ा है
चमचम जेड़ी गोळ आँख्या, ने बालड़ा चाऊमीन

रात रा साजन पलंग पौड़िया, सपना सहज सुहाया
समझ इमरती कान लुगाई रा, कच-कच घणा चबाया
वा समझी के प्रीत निभाई, डाचो भर ग्यो हाय कमीण!

माल्या खाग्यो बैंक रो धन, ने खाके होयो फरार रे
नेता सारा देश खा गिया, ली नहीं एक डकार रे
मैं भोळो बस भोजन मांगूँ, ओ हक़ मासू मत छीन!
बलम म्हारो खाबा को शौकीन

facebook आयुषि राखेचा

30 नवम्बर 1969 को अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन में काव्यपाठ करते हुए सर्वश्री सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, काका हाथरसी, शंभुनाथ सिंह, कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच', सुरेश उपाध्याय, सोम ठाकुर और हरिराम द्विवेदी।

(यह चित्र श्री सुरेश उपाध्याय जी ने उपलब्ध करवाया)

पुराने चावल

पुराने चावल कविग्राम की डिजिटल लाइब्रेरी है, जिसमें कवि–सम्मेलनों के पुराने दुर्लभ वीडियो निरंतर सम्मिलित किये जा रहे हैं। कविग्राम का उद्देश्य है कि इन वीडियो के माध्यम से वाचिक परम्परा के प्रशिक्षु तथा शोधार्थी पुराने कवियों से परिचित हो सकें। कविग्राम एक अव्यावसायिक पटल है, जो वाचिक परम्परा के लिये समर्पित है। प्रस्तुत हैं एपिसोड 109 से 117 तक की कड़ियाँ :

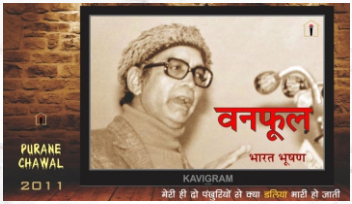

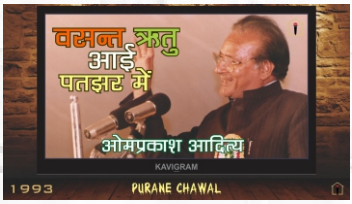

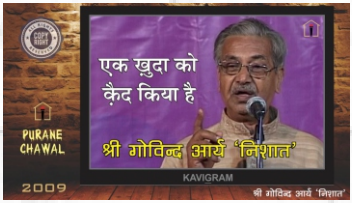

नवम्बर
2020

संजय उवाचः ...

कवि और नेता, दोनों का परस्पर कोई तालमेल नहीं है, बल्कि घालमेल है। कवि अगर नेता हो जाता है तो वह नेताओं में साहित्य का रुआब झाड़ता है, नेता कवि हो जाता है तो वह कवियों में नेतागिरी का। कविता और नेता ब्रश और पॉलिश का घर्षण हैं, जिससे जूता और बूता का 'ता' चमकता है। राजनीति नेहरू के नेह को समझती है, कवि अथवा कविता की रूह को नहीं। क्रूर सच है, नेताओं के लिये कवि उनके बयानों का 'पॉलिशिया', बजट रहित साहित्यिक संस्थाओं का 'सदसिया', एक चौपहिया वाहन का 'ख़्वाहिशिया', दिल्ली के स्टेट गेस्ट हाउस का 'रिहाइशिया' और सर्किट हाउस के नाश्ते और वक़्त ज़रूरत 'मालिशिया' के अलावा कुछ नहीं।

अगर ऐसा नहीं होता तो राजनीति में मैथिलीशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर की 'इति' न होती, 'इतिहास' होता। इतिहास ये है –

त्यजेत क्षुधार्ता, जननी स्वपुत्रम्,
खादेत क्षुधार्ता जननी स्वमंडम्।

राजनीति भूखी सर्पिणी है, जो भूख में अपने जने को खाने से नहीं हिचकती। राजनीति के प्रवक्ता, वक्ता, अधिवक्ता, चारण और भाटों को यह समझना चाहिए।

महाकवि माघ राजनीति में शिशुपालवधम् में सबसे बड़े रूप में परिभाषित करते हैं। वे कहते हैं – **'आत्मोदयः, परज्यानिर्द्वयं नीतिरिती यती'...** अपना अभ्युदय और दूसरे की हानि... यही है पॉलिटिक्स का मआनी। सही तो ये भी है कि हम अध्यात्म और

मूल्यों से विहीन 'पशु' हैं। राजनीति में हम अपने से बड़े का चुनाव करते हैं अर्थात् **संस्तुतः पुरुष पशु (श्रीमद्भागवत 2.3. 19)।**

और चलते-चलते... राजनीति के पाण्डवों में अपने बात के नाम पर आम सहमति नहीं हो, लेकिन वो सत्ता की द्रौपदी को मिल-बाँटकर भोगते हैं।

राजनीति है साँप-सीढ़ी, बिन चौसर का जुआ है
यहाँ बिना आग, उठते देखा धुँआ है
जहाँ प्रसव के तुरन्त बाद माता जवाब दे देती है
ये बच्चा मेरी जानकारी के बिना हुआ है

facebook ■ संजय झाला

एक बार की बात है...

सहिष्णु राजनीति और स्वाभिमानी कविता

आपातकाल के दौरान कविवर श्री भवानी प्रसाद मिश्र त्रिकाल सन्ध्या शीर्षक तले तीन कविताएँ प्रतिदिन आपातकाल के विरुद्ध लिखते थे। यह बात सर्वविदित थी।

एक बार भवानी दादा को हृदयरोग हुआ तो डॉक्टर ने पेसमेकर लगवाने की सलाह दी। उन दिनों श्री विद्याचरण शुक्ल सूचना एवं प्रसारण मन्त्री थे। उन्होंने श्री सुरेन्द्र शर्मा जी को बुलाकर कहा कि त्रिकाल सन्ध्या शृंखला के कारण भवानी दादा से बात करना मेरे लिये तो उचित नहीं है, किन्तु मुझे पता चला है कि उन्हें पेसमेकर लगवाने की ज़रूरत है। मैं चाहता हूँ कि सरकार की तरफ़ से यह उपचार करवा दिया जाये। तुम मेरा नाम बताये बिना उन्हें यह सन्देश दे दो कि उनका इलाज सरकार की तरफ़ से करवा दिया जायेगा।

सुरेन्द्र शर्मा जी ने भवानी दादा के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा। किन्तु भवानी दादा ने मुस्कुराते हुए यह कहकर अस्वीकार कर दिया — "राजा भैया, अब इस शरीर में सरकारी दिल नहीं धड़केगा।" ■

दिव्यांग विमर्श समावेश

साहित्य की दुनिया में अलग-अलग विषयों को केन्द्र में रखकर अनेक विमर्श सामने आये लेकिन विकलांगता विमर्श की उपस्थिति सही से दर्ज नहीं हो सकी। पिछले एक दशक में कुछेक फिल्में ज़रूर आयीं लेकिन साहित्य में ऐसा ठोस कुछ नज़र नहीं आया। हालाँकि इस बात से इनक़ार नहीं किया जा सकता कि निजी तौर पर लोगों ने इस विषय पर अवश्य कुछ लिखा है, लेकिन उसे विमर्श नहीं कहा जा सकता। यदि हम कविताओं और कहानियों का एक ऐसा संकलन ढूंढ़ें, जिसके केन्द्र में विकलांगता हो, तो मिलने की संभावना न के बराबर होगी।

साहित्य की दुनिया में विकलांगता विमर्श की शुरुआत करने के उद्देश्य से 'समावेश' एक प्रयास के रूप में सामने आया। इस विचार के सर्जक श्री गौरव अदीब, पेशे से अध्यापक हैं, जो विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ काम करते हैं। इस विचार को मूर्तरूप देने की बड़ी ज़िम्मेदारी 'विटामिन ज़िन्दगी' जैसी पुस्तक के लेखक और कविताकोश एवं गद्यकोश के संस्थापक श्री ललित कुमार उठा रहे हैं। इस प्रयास के अन्तर्गत विकलांगता को केन्द्र में रखकर लिखी गयी कविताओं को आमन्त्रित किया गया, जिसके संयोजन का कार्य कविताकोश और गद्यकोश की निदेशक श्रीमती शारदा सुमन ने किया। श्री ललित कुमार तथा श्री स्वप्निल तिवारी के सम्पादन में कविताकोश के बैनरतले यह पुस्तक प्रकाशित की जायेगी। इसका विमोचन 'वर्ल्ड डिसेबिलिटी डे' के अवसर पर किया जायेगा। पुस्तक में संकलित रचनाएँ कविताकोश वेबसाइट के विकलांगता अनुभाग में भी पढ़ी जा सकेंगी।

उत्सवों की सुगबुगाहट

भारतीय संस्कृति उत्सवधर्मा है। विविध अवसरों पर उत्सव मनाने का उपलक्ष्य ढूंढ़ लेने में हम दक्ष हैं, किन्तु कोविड काल में इस संस्कृति पर ग्रहण लग गया। कुछेक ऑनलाइन कार्यक्रमों के अतिरिक्त कवि-सम्मेलनों का वह माहौल देखने को आँखें तरस गईं, जिसमें रात-रात भर रसवृष्टि होती थी। गत तीन माह से इन कार्यक्रमों की फिर से सुगबुगाहट प्रारंभ हो रही है। एक तरफ़ नैराश्य की कौरव सेना है और दूसरी ओर सृजन का पाण्डव दल। नवम्बर माह में भी कुछ कार्यक्रम आयोजित हुए। सभी आयोजकों को साधुवाद!

कविग्राम

कविग्राम की पत्रिका यदि आपको व्हाट्सएप संख्या 8090904560 के अतिरिक्त किसी माध्यम से प्राप्त हो रही है तो कृपया उक्त नम्बर पर अपना नाम तथा शहर का नाम लिखकर व्हाट्सएप करें। अगर आपने पहले इस प्रक्रिया के तहत सदस्यता अनुरोध किया है और आपका नाम पंजीकृत नहीं हो पाया है, तो कृपया एक बार पुनः **अपना नाम तथा शहर का नाम 8090904560 पर लिखकर व्हाट्सएप करें।**

कविग्राम परिवार के पास सीमित मानव संसाधन हैं। ऐसे में बहुत संभव है कि आपका संदेश हमसे छूट गया हो। इस स्थिति में कविग्राम को अपना परिवार मानते हुए कृपया हमें क्षमा करें और उक्त प्रक्रिया पर दोबारा प्रयास करें। हम आपके आभारी रहेंगे। एक बार आपका नम्बर हमारे डाटा बेस में दर्ज हो जाने के बाद आपको प्रत्येक माह यह पत्रिका आवश्यक रूप से भेजी जाती रहेगी।